# प्रेम विज

## त्याग

ई-मेल-:premraj1284@gmail.com

एक मकान में आधी रात को आग लग गयी। सभी तरफ हाहाकार मच गया। लोग आग बुझाने के लिए भागने लगे। आग लगे मकान में गोद में बच्चा उठाए एक स्त्री और पुरुष सहायता के लिए पुकार रहे थे। भीड़ तमाशा देखने में लगी थी। अचानक एक युवक और पुरुष भी युवक द्वारा लगाई सीढ़ी से नीचे उतर आए।

"नौकर तो अंदर ही रह गया।" उन्होंने बताया।

युवक फिर अंदर घुस गया। नौकर की तलाश में युवक का शरीर झुलस गया। उसे अचेतावस्था में अस्पताल पहुँचाया गया। डॉक्टर उसे बचाने में जुट गये।

"क्या नौकर बच गया है ?" युवक बेहोशी की हालत में भी बड़बड़ाए जा रहा था।

---



# विपिन जैन

## इस बार

ई-मेल-:vipinjain456@gmail.com

हम दोनों यानी मैं और मेरी पत्नी दोनों ने मेरे रिटायरमेंट के बाद गाँव वाले घर में ही रहना पसंद किया। एक बेटा बैंगलोर में और दूसरा छोटा यू एस में है।

बैंगलोर वाले बेटे के पास हर साल एक महीने के लिए रहने चले जाते थे।

जब यहाँ भयंकर सर्दी और गर्मी पड़ती है, तब हम उसके पास रहने चले जाते हैं। इस बार सोचा कि कुछ और दिन ज्यादा रह लेगें।

इस बार खाना मेड ने बनाकर खिलाया ।

इस बार किसी के पास कोई समय नहीं था, जो हमारे पास बैठ सके।

इस बार 15 दिन में ही मन उखड़ने लगा।

इस बार लगा—सत्कार का भाव नहीं है।

इस बार बच्चे मोबाइल और लैपटॉप में खोये रहे ।

इस बार लौटकर भी किसी ने नहीं पूछा कि जल्दी क्यों लौट आये?

इस बार यहाँ और वहाँ दोनों जगह बदली हुई थीं।

इस बार हमने सोचा—अपनापन भी दो-चार दिन ही चलता है।

इस बार हमने सोचा कि यहीं रहेंगे, अपने घर।